2. अपठित काव्यांश

अभ्यास-कार्य

● **निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

पृष्ठ संख्या–92

काव्यांश-1

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (क) 2. (क) 3. (घ) 4. (ख) 5. (क)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. कवि बँधी-बँधाई परंपरा पर चलनेवाली ज़िंदगी, पराश्रित ज़िंदगी की आलोचना कर रहा है। कवि के अनुसार जीवन में संघर्ष ही सच है।
2. काव्यांश के अंतिम पद में कवि आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनने के लिए कह रहा है। कवि के अनुसार कोई किसी को सुख प्रदान नहीं करता। संघर्ष की बदौलत ही हमें अपना प्राप्य मिलता है।
3. सारा संसार आदमी की चाल देखकर चकित हुआ।
4. जिस कार्य से हृदय को बल और संबल मिले, वही मनुष्य का ध्येय होना चाहिए।
5. प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से कवि इस ध्रुव सत्य से अवगत कराना चाह रहे हैं कि व्यक्ति की सत्ता उसके कर्तव्यपथ पर आई नाना प्रकार की कठिनाइयों से संघर्ष करते रहने से स्थापित होती है। अतः सच हम या आप नहीं बल्कि हमारे और आपके द्‌वारा किया गया संघर्ष ही सच है।

पृष्ठ संख्या–92

काव्यांश-2

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ख) 2. (ख) 3. (क) 4. (ग) 5. (ख)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. कवि छोटे लोगों के लिए छोटी लड़ाई लड़ना चाहता है। कवि एक मामूली क्लर्क की लड़ाई लड़ना चाहता है, जो बिना चार्जशीट के मुअत्तल हो जाता है। पेट में अल्सर का दर्द लिए, जेबों में न्याय की अर्जी की प्रतिलिपियाँ भरकर नौकरशाही के फौलादी दरवाज़े को अपनी कमज़ोर मुट्ठियों से खटखटाता है।
2. 'नौकरशाही के फौलादी दरवाज़े' से कवि का तात्पर्य शक्तिशाली व्यवस्था के विरुद्ध एक निर्बल व्यक्ति द्वारा परिवर्तन की लड़ाई लड़ने से है। एक कमज़ोर व्यक्ति अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए शक्तिशाली प्रतिष्ठानों से लड़ता है तो वह निरीह लगता है। कवि ने इसे ही अपनी कविता की इस पंक्ति में मुखरित स्वर प्रदान किया है।
3. कवि छोटे लोगों, छोटी बातों के लिए एक छोटी-सी लड़ाई लड़ना चाहता है।
4. कवि किसी ऐसी सत्ता या व्यक्ति से लड़ाई नहीं लड़ना चाहता है जो कि किसी व्यक्तिगत प्रतीमान या नाम के लिए दूसरों से संघर्ष करने के लिए उदयत रहते हैं।
5. कवि के अनुसार मामूली क्लर्क बिना चार्जशीट के मुअत्तल हो जाता है।

पृष्ठ संख्या–93

काव्यांश-3

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ख) 2. (क) 3. (घ) 4. (क) 5. (ख)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. ऊन के बारे में माँ के विचार बहुत सख्त हैं। मृत्यु के विषय में उसके विचार बेहद कोमल हैं। पक्षियों के बारे में माँ कभी कुछ कहती नहीं, क्योंकि पक्षियों को माँ अपने समान ही समझती है।
2. कवि ने माँ को करघा कहा है। जिस प्रकार करघा कपड़ा बुनता है, उसी प्रकार माँ सुई और तागे से कपड़े सिलती है। साठ वर्षीया माँ बीते वर्षों में लगातार अपने कामों द्वारा एक करघे के समान बुनाई करती रही है।

3. जब सर्दियाँ आती हैं तब माँ अपनी परछाईं की ओर थोड़ा और झुक जाती है।

4. जब माँ बहुत ज़्यादा थक जाती है, तब वह सुई और तागा उठाकर सबके सो जाने पर सिलाई करती है।

5. 'समय को धीरे-धीरे सिलते हैं' से कवि का आशय यह है कि वृद्धावस्था के कारण माँ का हाथ तेज़ी से नहीं चलता। अतः वह धीरे-धीरे सिलाई का काम करती है।

पृष्ठ संख्या–94

काव्यांश-4

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (घ) 2. (क) 3. (ग)
4. (घ) 5. (ख)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. लाउडस्पीकरवाला मुहल्ले में शांति बेचता है।
2. लाउडस्पीकरवाला जानता है कि आने वाले समय में साफ़ पानी और स्वच्छ वायु से भी अधिक शांति की कमी होगी। क्रांति का समय गुज़र जाने के कारण अब उसे अपना पेट पालने के लिए शांति का धंधा अपनाना है।
3. आनेवाले समय में शांति की किल्लत होगी।
4. कवि जानता है कि भारत जैसे देश में जहाँ कीमतें आसमान छू रही हैं, सौ रुपये महीने की दर से दो घंटे प्रतिदिन शांति महँगी नहीं है।
5. **शीर्षक**–शांति की किल्लत

पृष्ठ संख्या–95

काव्यांश-5

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ग) 2. (क) 3. (ख)
4. (घ) 5. (घ)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. दरवाज़े पर कुदाल का होना कवि को अटपटा-सा लगता है। सूर्यास्त के समय की धुँधली रोशनी में कवि को कुदाल की अजब अड़बंग-सी धूल भरी धज आकर्षित करती है, इसलिए कवि उसे घर के अंदर किसी कोने में रखना चाहता है।
2. कुदाल को ड्राइंग रूम में रखने की बात पर कवि के मन में कई विचार आए। कवि ने सोचा, न सही कुदाल एक अलंकार ही सही, नागफनी यदि वहाँ रह सकती है, तो कुदाल क्यों नहीं? फिर कवि ने सोचा कि ड्राइंग रूम में कुदाल रखने से घर का संतुलन बिगड़ सकता है। अंत में कवि को पलंग के नीचे कुदाल छुपाने का खयाल आया।
3. माली दरवाज़े पर कुदाल रखकर चला गया है।
4. जाते हुए दिन की धुँधली रोशनी में कुदाल की अजब बेढब-सी धूल भरी शकल-सूरत (धज) कवि को आकर्षित करती है।
5. क्योंकि ड्राइंग-रूम में कुदाल रखने से घर का संतुलन बिगड़ सकता है।

पृष्ठ संख्या–96

काव्यांश-6

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ख) 2. (ख) 3. (घ)
4. (ख) 5. (ग)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. जीवन आपदाओं से भरा पड़ा है। अतः जब भी हँसी के क्षण मिल जाएँ तो उन क्षणों में हँस लेना चाहिए। अवसर को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए।
2. आकाश में जब बादल आते हैं तो हँसता यानी चमकता हुआ चाँद भी नहीं दिख पाता है। अर्थात सब कुछ नश्वर है।
3. 'उगता-ढलता रहता सूरज' के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि जीवन में समय सदा एक-सा नहीं रहता है। अच्छे-बुरे वक्त के साथ सुख-दुख आते-जाते रहते हैं।
4. व्यक्ति यदि सामर्थ्यवान बनता है तो उसे दूसरों की सहायता करनी चाहिए।
5. रूपक अलंकार

पृष्ठ संख्या–97

काव्यांश-7

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ग) 2. (ग) 3. (ख) 4. (ख) 5. (ग)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. तलवार की धार पर चलना।
2. 'सर काट हथेली पर लेकर बढ़ जाओ' अर्थात देश-कल्याण एवं लोक-कल्याण हेतु सब-कुछ न्योछावर करने के लिए तत्पर हो जाओ। इस रास्ते पर चलते समय मौत को भी अंगीकृत करने के लिए तैयार रहो।
3. समय नवयुवकों से अपना सर्वस्व अर्पित करते हुए देश की उन्नति एवं उत्थान करने की चुनौती दे रहा है। कवि को देश के नवयुवकों पर पूरा विश्वास है।
4. कवि का कहना है कि किन्हीं कारणों से जो लोग पिछड़ गए हैं या समाज से वंचित या हेय दृष्टि के शिकार हैं, उन्हें भी गले लगाने की आवश्यकता है।
5. जब मनुष्य किसी देश या समाज के कल्याण में अपना जीवन समर्पित कर देता है वह मरकर भी अमर हो जाता है।

पृष्ठ संख्या–97

काव्यांश-8

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (घ) 2. (घ) 3. (घ) 4. (ख) 5. (ख)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. वीर जवानों के सम्मुख कवि ने उनकी चुप्पी को लेकर सवाल खड़ा किया है। उनका कहना है कि जब देश के दुश्मन चारों तरफ से देश का नुकसान करने पर अमादा हैं तो ऐसे में आप मूकदर्शक क्यों बने बैठे हैं।
2. मनुष्य जब-जब देश हित के लिए संपूर्ण मनोभाव से तत्पर हुआ है तब-तब काल को अपने वश में करने में समर्थ हुआ है।
3. कालकूट एक भयानक विष है। यहाँ पर इसका यह अभिप्राय है कि चाहे

परिस्थितियाँ कितनी भी घातक हों देश के वीर जवानों ने उनसे सहर्ष दो-दो हाथ किए हैं।

4. देश की विरोधी गतिविधियों में लिप्त होने वालों को कवि ने जयचंद की संज्ञा दी है।
5. **शीर्षक**–देशभक्ति

पृष्ठ संख्या–98

काव्यांश-9

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (घ) 2. (ग) 3. (घ) 4. (घ) 5. (ग)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. भारत के ऋषि-मुनियों एवं साधु-संतों ने धरती को अपने श्रम एवं साधना से पवित्र किया तथा यहाँ के नागरिकों को आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान किया।
2. प्र० – 'असि-धारा पर चलते हैं', से कविता का क्या अभिप्राय है।
   उ० – 'असि-धारा पर चलते हैं' से कवि का अभिप्राय है कि वे भयानक कष्टों में जीते हैं।
3. इसका अभिप्राय यह है कि ऋषि-मुनि अपनी कठिन साधना के द्वारा मानव जाति के पथ को आलोकित करते हैं।
4. प्र० – ऋषि-मुनियों की वाणी का लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है?
   उ० – ऋषि-मुनियों की अमृतसम वाणी को सुनकर लोगों का जीवन सँवर जाता है।
5. प्र० – 'करुणामय है जिनकी वाणी' से कवि का क्या तात्पर्य है?
   उ० – ऋषि-मुनियों की वाणी में परोपकार एवं जन-कल्याण की भावना होती है।

पृष्ठ संख्या–99

काव्यांश-10

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (घ) 2. (घ) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. कवि मानता है कि हमारे और हमारे देश के बीच अन्योन्याश्रयी संबंध है। यदि हम बुलबुल हैं तो देश गुल है। हमारा देश हमारा संबल अर्थात सहारा है। इन्हीं भावनाओं से प्रेरित होकर कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है कि मुझमें देश के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना इसी तरह से बनी रहे, साथ-साथ हमारा देश सभी देशों के ईश्वर के रूप में प्रतिस्थापित हो।
2. हमारे प्यारे देश ने हिमगिरि रूपी मुकुट धारण कर रखा है।
3. पहले पद में कवि ने अपने देश का गुणगान इन शब्दों में किया है–हमारा देश तीनों लोकों में न्यारा है। पर्वतराज हिमालय हमारे देश का मुकुट है। उसका वेश अत्यंत सुंदर है।
4. 'बल दो हमें ऐक्य सिखलाओ' पंक्ति के माध्यम से कवि देश को शक्तिशाली बनाना चाहता है ताकि एकता में बाधक तत्वों और दुष्ट पड़ोसियों का दमन किया जा सके।
5. **शीर्षक–**जै-जै प्यारे देश हमारे

पृष्ठ संख्या–100

काव्यांश-11

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ग) 2. (ग) 3. (क) 4. (घ) 5. (क)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. कवि भारत के प्राचीन गौरव, प्रतिष्ठा, आत्मसम्मान की देशवासियों को याद दिलाना चाहते हैं और कहते हैं कि यह भावना मिटनी नहीं चाहिए।
2. जिस तरह 'हार' में अलग-अलग रंगों के फूल गूँथे जाते हैं, उसी तरह अलग-अलग जाति, धर्म के लोग मिलकर एक हो जाएँ और भाई-भाई की तरह मिलकर देश की सेवा करें।
3. पुराने अंधविश्वास, ऐसी परंपराएँ जो भेदभाव पैदा करती हों या वे नए विचार जो देश के लिए हितकारी न हों, उन्हें छोड़ने की बात कवि कह रहे हैं।
4. 'हंस' के बारे में कहावत है कि वह नीर-क्षीर (दूध और पानी) को अलग-अलग कर देता है। इसलिए उसकी चतुराई प्रसिद्ध है।

5. कवि ने अपने दुख से ही दूसरों के दुख को अनुभव करने की बात कही है।

पृष्ठ संख्या–101

काव्यांश-12

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ग) 2. (ख) 3. (ख) 4. (क) 5. (ख)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. वह किसी अन्य पर आश्रित हुए बिना स्वयं अपने जीवन की नाव को खेना चाहते हैं।
2. जीवन में कभी सुख की तो कभी दुख की, कभी स्नेह की तो कभी कटुता की, कभी मस्ती की तो कभी पीड़ा की लहरें आती रहती हैं, जो कवि को पसंद हैं।
3. कवि कहते हैं कि वह उन लोगों में से हैं, जो संघर्ष के पथ पर अबाध गति से बिना रुके और बिना थके आगे बढ़ते रहते हैं।
4. कवि अपनी इच्छा से जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्तियों में से हैं। उन्हें किसी का बंधन स्वीकार्य नहीं है।
5. कवि के ऐसे अरमान नहीं हैं, जो छोटी-छोटी बातों से तथा कठिनाइयों से बिखर जाएँ।

पृष्ठ संख्या–101

काव्यांश-13

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (घ) 2. (ग) 3. (ख) 4. (घ) 5. (ग)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. जब उसे संसार में दूसरों से प्रेम और स्नेह नहीं मिलता, विश्वास नहीं मिलता या जब उसके मन को ठेस पहुँचती है।
2. अकेलेपन में कवि को अपने बचपन के दिन और माँ का असीम स्नेह याद आता है।

3. 'सिर पर हाथ फेरना' माँ के अटूट प्रेम और स्नेह का प्रतीक है।
4. बच्चे के प्रति माँ की ममता, प्यार तथा दुलार।
5. **शीर्षक**–'माँ का स्नेह भरा आँचल' या 'माँ की ममता'।

पृष्ठ संख्या–102

काव्यांश-14

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ग) 2. (क)
3. (ग) 4. (घ)
5. (ख)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. जिस प्रकार वस्त्र नारी की लज्जा को ढकने का कार्य करते हैं, उसी तरह वृक्ष भी पृथ्वी की लज्जा को ढकते हैं। वृक्षों के अभाव में पृथ्वी निर्वस्त्र प्रतीत होती है।
2. युद्ध में भयंकर नरसंहार देखकर अशोक को पश्चाताप हुआ था।
3. 'गोद में मुँह छिपाने' का अर्थ है किसी की शरण में जाना। अशोक ने बौद्ध धर्म की शरण ली थी।
4. वृक्ष काटने से फल नहीं मिलते, थके हुए मुसाफ़िरों को शीतल छाया नहीं मिलती तथा वर्षा न होने से हरे-भरे खेत रेगिस्तान में बदल जाते हैं।
5. विशेषण पदबंध।

पृष्ठ संख्या–103

काव्यांश-15

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ग) 2. (घ) 3. (घ) 4. (ग) 5. (क)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. जब चारों ओर धर्म की स्थापना होगी और सब के मन में दूसरों के लिए दया और प्रेम का भाव होगा।

2. इस संसार में बहुत से ऋषि-मुनि, तपस्वी, साधक, समाजसेवी हुए, जिन्होंने लोक-कल्याण के लिए अपना जीवन लगा दिया।
3. कवि उस स्थिति की कल्पना नहीं करते, जब मानव दूसरों को दुख पहुँचाकर सुखी होगा।
4. केवल शब्दों से ही हमने महापुरुषों को सम्मान दिया है, मन से नहीं दिया।
5. कवि के अनुसार मनुष्य अभी भी पुरानी राह पर चल रहा है।

पृष्ठ संख्या–103

काव्यांश-16

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (घ) 2. (घ)
3. (घ) 4. (ग)
5. कथन (ii) और (iv) सही हैं।

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. देश केवल ग्राम, नगर या कुछ लोगों का काम नहीं होता है। एक निश्चित भू-भाग में रहने वाले सभी लोगों, सभी प्राकृतिक, कृत्रिम रचनाओं के सम्मिलन से देश बनता है।
2. जहाँ प्रेम होता है, वहाँ का वातावरण प्रेममय और उल्लासपूर्ण होता है।
3. देश का परचम धर्म, जाति और भाषाओं के उच्चस्तरीय होने से ऊँचा होगा।
4. मेरे अनुसार एक देश में निम्नलिखित विशेषताएँ होनी चाहिए–
   (*i*) देश के सभी नागरिकों में प्रेम और भाईचारा होना चाहिए।
   (*ii*) बिना किसी बाहरी देश के दबाव में आए निर्णय लेने की क्षमता होनी चाहिए।
   (*iii*) देश के प्रत्येक नागरिक के अंदर अपनी विशिष्टता बनाए रखने के लिए कुछ अनोखा और सकारात्मक कर गुज़रने की भावना होनी चाहिए।
5. **शीर्षक**–'देश'।

पृष्ठ संख्या–104

काव्यांश-17

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ख) 2. (ग)
3. (ग) 4. (ख)
5. (घ)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. मंजिल तक पहुँचने में मात्र एक खाई यानी रुकावट ही शेष है। उसे ही कवि पार करने की बात कर रहे हैं।
2. कवि श्रोता को मंज़िल प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।
3. दिशाओं को पुण्य का प्रकाश मिल रहा है।
4. यह कविता स्वतंत्रता पूर्व की पृष्ठभूमि पर लिखी गई है। स्वतंत्रता पाने के लिए आत्मोत्सर्ग करने के पश्चात् आज़ादी के बाद तो अच्छे दिन आएँगे ही। इस पंक्ति से कवि का यही आशय है।
5. इस पंक्ति में 'जाँच' से आशय भारतीय जनता द्वारा सही जाने वाली भीषण यातनाओं से है।

पृष्ठ संख्या–105

काव्यांश-18

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ख) 2. (ख)
3. (क) 4. (ग)
5. कथन (i), (ii) और (iv) सही हैं।

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. कवयित्री मंदिर में पूजा करने गई थीं।
2. कवयित्री प्रभु की उपासना करने में इसलिए लाचार है कि उसके पास प्रभु को अर्पित करने के लिए किसी प्रकार की बाह्य वस्तु नहीं है।
3. गरीब होने के कारण कवयित्री के पास प्रभु को चढ़ाने के लिए मुक्तामणि,

बहुमूल्य वस्तुएँ नहीं हैं। धूप, दीप, नैवेद्य नहीं हैं। झाँकी का शृंगार नहीं है। प्रभु को गले में पहनाने के लिए फूलों का हार नहीं है। स्तुति के लिए स्वर में माधुर्य नहीं है। दान-दक्षिणा के लिए कोई सामग्री नहीं है। कवयित्री पूजा की विधि भी नहीं जानती। ये कमियाँ ही कवयित्री को प्रभु वंदना करने में बाधा पहुँचा रही हैं।

4. इस कविता में कवयित्री गरीब वर्ग की प्रतिनिधित्व कर रही हैं।
5. इस पंक्ति द्वारा कवयित्री प्रभु के प्रति अपनी उद्दीप्त भक्ति भावना को प्रकट करना चाहती हैं। खाली हाथ मंदिर आई कवयित्री प्रभु-भक्ति में मतवाली होकर उन्हें प्रेम के लिए प्यासा अपना हृदय दिखाना चाहती हैं।

पृष्ठ संख्या–106

काव्यांश-19

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (क) 2. (ख)
3. (क) 4. (ख)
5. (क)

लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

1. कवि को विधाता से कलम रूपी अनमोल रत्न प्राप्त हुआ है। जिस प्रकार राजा सिंहासन पर विराजते हैं, उसी प्रकार ताजों पर कलम आसीन होती है।
2. कलम संसार में क्रांति का बिगुल बजाती है। कलम सच और झूठ का पर्दाफाश करती है। चोरों के पास से कलम अनमोल सत्य रूपी रत्नहार छीन लाती है।
3. कवि अपना लेखन जग को न्योछावर करते हैं, क्योंकि कवि के पास विषय के रूप में सारा ब्रह्मांड है।
4. कलम अपनी लेखनी से प्यार की बीन बजा सकती है। कलम से ही समाजमें प्रेम की रसमयी धारा प्रवाहित होती है। समाज में मस्ती का आलम छाता है।
5. कलम में असीम ताकत होती है। कलम से क्रांति होती है, संग्राम छिड़ता है। कलम की ताकत से ही सत्ता के मद में चूर बड़े-बड़े साम्राज्यों का सूर्य अस्त हो जाता है।

पृष्ठ संख्या–107

काव्यांश-20

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ग) 2. (क) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ख)

पृष्ठ संख्या–108

काव्यांश-21

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ग) 2. (ख) 3. (क) 4. (क) 5. (घ)

पृष्ठ संख्या–108

काव्यांश-22

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ग) 2. (घ) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ख)

पृष्ठ संख्या–109

काव्यांश-23

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ग) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ख) 5. (घ)

❑❑❑